Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 10 ~ Issue 1 (2022) pp: 72-75
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

लोकमान्य तिलक: सामाजिक- शैक्षिक संदर्भ

डॉ. अपर्णा त्रिपाठी, एसो.प्रोफेसर
शिक्षा शास्त्र विभाग, ए.के.पी.जी.कॉलेज, हापुड़

सारांश

"स्वभाव से तिलक एक विद्वान थे और केवल आवश्यकता वश एक राजनेता" डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन

राष्ट्रीय आंदोलन और सक्रिय राजनीतिका हिस्सा बनने से पूर्व लोकमान्य तिलक एक शिक्षाशास्त्री थे, शिक्षा प्राप्ति के बाद उन्होंने सर्वप्रथम अध्यापन और शिक्षा संबंधी कार्यों पर अपना ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने शिक्षा को स्वतंत्रता, राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा स्वराज्य का आधार स्तंभ माना। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा पर केवल सैद्धांतिक और आदर्शवादी बातें नहीं कीं अपितु जीवन के अनेक वर्ष उन्हें व्यावहारिक जीवन में साकार करने लगाकर अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। तिलक की राष्ट्रीय शिक्षा ऐसे विचारों से ओतप्रोत है जो किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिए अत्यंत आवश्यक हैं/

संकेत शब्द: स्वदेशी, बहिष्कार,निष्क्रिय प्रतिरोध, राष्ट्रीय शिक्षा

Received 15 Jan, 2022; Revised 25 Jan, 2022; Accepted 31 Jan, 2022 © The author(s) 2022. Published with open access at www.questjournals.org

तिलक: परिचय व विचारधारा

"स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है" इस उद्घोष के प्रणेता, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, आधुनिक भारत के निर्माताओं में अग्रणी हैं। 23 जुलाई1856 को महाराष्ट्र के कोंकण क्षेत्र स्थित रत्नागिरी जिले में सुसंस्कृत चित्पावन ब्राह्मण परिवार में महान राष्ट्रभक्त, राजनीतिज्ञ, पत्रकार, दार्शनिक, कानून विद, शिक्षा विशारद, लोकमान्य तिलक का जन्म हुआ। उनके पिता गंगाधर रामचंद्र तिलक तथा माता पार्वतीबाई थीं। तिलक का जन्म नाम केशव था यद्यपि उनका प्रचलित नाम बलवंत राव रहा है, जो उनके पितामह के नाम पर रखा गया था। इनका बचपन रत्नागिरी में अपने पितामह से राष्ट्रभक्तों की कहानियां सुनकर तथा भारतीय संस्कृति परंपराओं से परिचित होते हुए व्यतीत हुआ। इनके पिता एक प्रभावी शिक्षक थे जिन्होंने गणित व व्याकरण पर पुस्तकों का लेखन भी किया। बाल्यकाल के पालन पोषण का प्रभाव, तिलक के जीवन व चरित्र पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। तिलक ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा रत्नागिरीकी मराठी पाठशाला में प्राप्त की।इनके पिता का स्थानांतरण पुणे हो जाने केकारण, आगे की पढ़ाई के लिए इनका प्रवेश एंग्लोवर्नाक्यूलर स्कूल में कराया गया। इस स्कूल में अध्ययन की अवधि के दौरान तिलक के निर्भय सत्यवादी न्यायप्रिय आदर्शवादी, स्वाभिमानी व्यक्तित्व को दर्शाने वाली घटनाएं हुई। संस्कृत और गणित तिलक के प्रिय विषय थे। 10 वर्ष की आयु में माता तथा 16 वर्ष की अवस्था में तिलक के पिता की असामयिक मृत्यु हो गई तत्पश्चात इनके चाचा चाची ने अभिभावक के उत्तरदायित्व का निर्वहन किया।तिलक का विवाह तापीबाई से हुआ, ससुराल आने पर जिनका नाम सत्यभामा बाई हो गया। सत्यभामा भाई ने तिलक के स्वतंत्रता और स्वराज्य के आंदोलन में अपना अदृश्य और अमूल्य सहयोग दिया। 1873 में तिलक में नेडेक्कन कॉलेज में प्रवेश लिया। कॉलेज के प्रथम वर्ष में तिलक ने शरीर सौष्ठव पर ध्यान केंद्रित करते हुए अपने सामान्य शरीर को व्यायाम,

कुश्ती, तैराकी सेसुगठित, शक्ति पूर्ण शरीर में परिवर्तित कर दिया। आगामी जीवन में ब्रिटिश सत्ता से विद्रोह व स्वराज्य के लिए किए गए अपने प्रयासों के कारण मिले शारीरिक और मानसिक संत्रास झेलने में यह शारीरिक क्षमता व शक्ति अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई। बीए ऑनर्स प्रथम श्रेणी के साथ उत्तीर्ण करने के पश्चात उन्होंने 1879 में एलएलबी किया। तिलक का मत था की गणित अच्छी नौकरी तो दिला सकता है किंतु कानून की पढ़ाई देश सेवा के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रो.छत्रे,प्रो.वर्ड्सवर्थ, प्रो.शूट, वे शिक्षक थे ,जिन्होंने तिलक के जीवन को गहन रूप से प्रभावित किया। गोपालराव अगरकर, ना.ग.चंदावरकर, खापर्डे, मुधोलकर, डी.एल.खरे,शारंगपाणि, तिलक के सहपाठी थे। इन सभी में से अगरकर से उनकी निकटता अधिक थी। कॉलेज की यह अवधि संभवत: उनके जीवन की सर्वाधिक सुखमय अवधि रही क्योंकि कॉलेज पूरा होने के बाद तिलक ने अपने जीवन को निस्वार्थ देश सेवा में संलग्न कर, राष्ट्रीय जागृति एवं स्वाधीनता प्राप्ति के हवन में, अनेक कष्टों का भागीदार बन कर,अपनी आहुति समर्पित की। स्वदेशी, स्वराज्य, बहिष्कार, निष्क्रिय प्रतिरोध एवं राष्ट्रीय शिक्षा के स्तंभों पर तिलक की विचारधारा अवलंबित है। यह कहा जा सकता है कि स्वदेशी का विचार तिलक से पूर्व अस्तित्व में था किंतु तिलक ने ही इसे लोकप्रियता दी। उनके लिए स्वदेशी, प्रचार आंदोलन के साथ-साथ आत्मनिर्भरता और विदेशी प्रभाव से मुक्ति का माध्यम था। उनका मत था लघु और कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित कर आर्थिक आत्मनिर्भरता भी प्राप्त की जा सकती है और बेरोजगारी की समस्या का समाधान भी किया जा सकता है, साथ ही यह राष्ट्रीय स्वाभिमान विकसित करने में भी सहायक होगा। बहिष्कार, स्वदेशी का आंदोलनात्मक आयाम था। निष्क्रिय प्रतिरोध के संबंध में तिलक कि मान्यता थी किशासितों के सहयोग के बिना शासन चलाया जाना असंभव है। उनका मत था किनिष्क्रिय बहिष्कार द्वारा स्वराज्य प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा हेतु अनेक प्रयास व संस्थाओं की स्थापना, केसरी और मराठा जैसे समाचार पत्रों का प्रकाशन, राष्ट्रीय आंदोलन हेतु शिवाजी एवं गणपति उत्सव का आरंभ, दुर्भिक्ष-महामारी में समाज सेवा, शराब विरोधी व किसान समर्थक आंदोलन आदि अनेक जन जागृति कार्यक्रमों के सूत्रधार तिलक ही बने। स्वाधीनता और स्वराज्य का अपना अधिकार मांगने पर इस महान देशभक्त को राजद्रोह का अपराध दंड भोगना पड़ा। अपने कार्यों व आचरणसे उन्होंने राजनीति को त्याग का उदाहरण बना दिया। गीतारहस्य, द ओरियन, द आर्कटिक होम इन वेदाज़, वैदिक क्रोनोलॉजी एंड वेदांग ज्योतिष उनके कुछ प्रमुख और महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

तिलक: सामाजिक-शैक्षिकसंदर्भ

डेक्कन कॉलेज में अगरकर और तिलक के मध्य हुए निरंतर विमर्श में यह निर्णय हुआ कि वह सरकारी नौकरी से दूरी बनाएंगे। तिलक के अनुसार"हम लोगों का हृदय उस समय देश के पतन को देखकर पीड़ित था हम लोग बहुत सोच विचार कर इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि मातृभूमि का उद्धार केवल शिक्षा से ही संभव है।"नवजीवन आरंभ कर रहे इन युवकों पर तत्कालीन, यथा- वासुदेव बलवंत फड़के का विद्रोह प्रयास,दादा भाई नौरोजीका भारत की बढ़ती गरीबी पर निबंध, श्रीरानाडे के निर्देशन में सार्वजनिक सभा की स्थापना तथा स्वदेशी वस्तुओं व कृषि पर उनके कार्य, महाराजा मल्हारराव गायकवाड प्रकरण तथा विष्णु शास्त्री चिपलुणकर की भारतीय संस्कृति संबंधी "निबंध माला"का अत्यधिक प्रभाव हुआ।1880 से तिलक ने राष्ट्रीय चेतना हेतु शैक्षिक-सामाजिक गतिविधियां आरंभ की।

1 जनवरी 1980 को चिपलुणकर, तिलक और अगर करद्वारा **"न्यू इंग्लिश स्कूल"** को आरंभ किया गया, जिसमें उनके अन्य सहपाठियों ने भी सहयोग दिया। मात्र 19 छात्र संख्या से आरंभ यह विद्यालय 3 माह के अंदर 500 तथा 4 वर्ष में 1000 से अधिक छात्र संख्या तक पहुंच गया। संस्थापकों की दृढ़ इच्छा शक्ति व योग्यता के बल पर इसने अनेक कीर्तिमान स्थापित किए। सरकारी अनुदान के बिना ही विद्यालय को चलाने के निर्णय का परिणाम यह हुआ कि तिलक व सहयोगियों को अवैतनिक कार्य भी करना पड़ा।1882में शिक्षा आयोग के अध्यक्ष डॉ. हंटर ने इस विद्यालय का वर्णन करते हुए लिखा-"स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता

*Corresponding Author: **डॉ.अपर्णा त्रिपाठी**

की भावना से प्रेरित कुछ सुयोग्य और उत्साही युवकों के प्रयासों के फलस्वरूप विद्यमान यह स्कूल,सरकार से कोई भी सहायता ना मिलने पर भी, न केवल इस देश के किसी भी सरकारी हाई स्कूल का ही वरन अन्य देशों के स्कूलों का भी मुकाबला कर सकता है और प्रतियोगिता में सफल सिद्ध हो सकता है।"

न्यू इंग्लिश स्कूल की सफलता और लोक कल्याण कार्यों के कारण बढ़ी लोकप्रिय ताने तिलक के अराजकीय कॉलेज की स्थापना के विचार को दृढ़ कर दिया। अक्टूबर 1984 में पुणे में एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी की स्थापना का निर्णय हुआ। इस सभा में महादेव रानाडे, सर विलियम वेडरबर्न, डॉक्टर भंडारकर, प्रोफ़ेसर वर्ड्सवर्थ और के.टी.तैलंग उपस्थित थे।इस संस्था का उद्देश्य शिक्षा के व्यय को घटाना और विद्यालयों व महाविद्यालयों को देशी प्रबंध के अंतर्गत एक सूत्र में संयुक्त करना था। इस प्रयास का समर्थन कुछ राजा महाराजाओं ने भी किया और कॉलेज भवन के लिए 75000 का दान वचन प्राप्त हो गया। 1985 में पुणे में फग्र्युसन कॉलेज आरंभ हुआ। डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी ने अन्य संस्थाओं जैसे आर्य समाज के लिए भी प्रेरणा स्रोत का कार्य किया । तिलक ने इसकॉलेज में गणित व संस्कृत अध्यापन किया।

"राष्ट्रीय शिक्षा की अवथारणा", परतंत्रता से मुक्ति तथा देशोत्थान हेतु तिलक की विचारधारा का अभिन्न अंग रही। तिलक के अनुसार मानव सभ्यता के सभी अभिकर्ताओं में केवल शिक्षा ही ऐसी शक्ति है जिसके माध्यम से पिछड़े देशों का आर्थिक- धार्मिक पुनरुत्थान होता है और उसी से वे धीरे-धीरे संसार के सर्वाधिक उन्नत देशों के स्तर पर जा पहुंचते हैं। तिलक के अनुसार राष्ट्रीय शिक्षा वही है जिससे राष्ट्र को जानने में सहायता प्राप्त हो क्योंकि यह कार्य अंग्रेजी सरकार द्वारा संचालित विद्यालयों में नहीं हो सकता अतः इसे राष्ट्रीय शिक्षा के अंतर्गत किया जाना चाहिए। इसी विचार को मूर्त रूप देने के लिए न्यू इंग्लिश स्कूल इत्यादि संस्थाओं की स्थापना की गई। उन्होंने विद्या प्रसारक मंडल की भी स्थापना की जिसके तत्वाधान में अनेक स्थानों पर समर्थ विद्यालय स्थापित किए गए। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय की संकल्पना भी प्रस्तुत की। उनके मत में विद्यार्थियों को राष्ट्रवाद की शिक्षा दी जानी चाहिए, साथ ही तकनीकी वऔद्योगिक शिक्षा की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

भारतीयों को पश्चिमी सभ्यता से विस्मित तथा अपनी परंपराओं संस्कृति और धर्म से विमुख होते देख तिलक नेराष्ट्रीय शिक्षा में भारतीय संस्कृति का समावेश किया ताकि लोग भारतीय विचारधारा के यथार्थ कल्याणकारी स्वरूप से परिचित हो सकें।

तिलक मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्ष में थे ताकि विद्यार्थियों के समय श्रम एवं बुद्धि का सदुपयोग हो सके। तिलक काम तथा कि देवनागरी लिपि तथा हिंदी भाषा देश की राष्ट्रभाषा बने। उनके अनुसार शिक्षा के प्रसार तथा राष्ट्रीय एकता हेतु एक भाषा के व्यवहार से अधिक शक्तिशाली और कोई माध्यम नहीं है। पाठ्यक्रम में अंग्रेजी के स्थान के समर्थक थे किंतु शिक्षा के माध्यम के रूप में अंग्रेजी के नहीं।

शिक्षा समाज सुधार का सर्वोत्तम साधन है इसके प्रसार का एक आदर्श व्यवहार सौ उपदेशों से अधिक शक्तिशाली होगा, इस मान्यता के समर्थक तिलक समाजिक सरोकारों यथा स्त्री शिक्षा,मद्य निषेध, संस्कृति संरक्षण,शिवाजी वगणपति उत्सव में सदैव सक्रिय एवं क्रियाशील रहे। समाज सेवा समाज सेवा की तिलक की भावना 1890 को डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी को लिखे पत्र में परिलक्षित होती है-"हमारा उद्देश्य निस्वार्थ भाव से काम करना औरपाठशालाओं का जाल बिछा देना है, कम से कम मेरे जीवन की महत्वाकांक्षा तो इस सोसाइटी के माध्यम से शिक्षा विषयक कार्य करने की रही"

तिलक नेनैतिकता और सुसंस्कृत नागरिकों के निर्माण के लिए धार्मिकता की महत्वपूर्ण भूमिका मानी। वे आधुनिक राष्ट्रवाद की आधारशिला प्राचीन संस्कृति और विचारों की नींव पर रखने के समर्थक थे, साथ ही अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली के गुणों से भी उनका विरोध नहीं था।अनिवार्य शिक्षा योजना को तिलक ने उस समय आवश्यक बताया, जब देश परतंत्रता के बंधनों में था।

उन्होंने जन शिक्षा और स्त्री शिक्षा को समाज सुधारऔर जन जागरण हेतु अत्यावश्यक बताया। किसी भी विषय पर तिलक के सुझावकोरे आदर्शवाद पर आधारित नहीं होते थे। स्त्रियों के उत्थान हेतु उनके द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव इस प्रकार के व्यवहारिक और स्वयं से शुरू होने वाले सुधारोंसे युक्त था कितत्कालीन समाज सुधारक उसे स्वीकार करने का साहस न कर सके।

तिलक की समाज एवं सामाजिक कार्यों में तत्परता व संलग्नता, केसरी व मराठा समाचार पत्रों के माध्यम से जन जागरण एवं उनके राष्ट्रीय शिक्षा व्यवस्था संबंधी प्रयासों से अंग्रेजी सरकार भी चिंतित थी।शिक्षा को उन्होंने स्वाधीनता प्राप्ति का अस्त्रबनाया। वेऐसे शिक्षित नागरिकों को तैयार करना चाहते थे जिनके अंदर राष्ट्रभक्ति भरी हो और जो स्वयंसेवक की भांति कार्य कर सकें। लॉर्ड मिंटो, मार्ले, सिडेन होम के बीच पत्र व्यवहार (1908) को यहां उद्धृत करना समीचीन होगा-

"तिलक भारत में अंग्रेजी सरकार के अस्तित्व को मिटाने के सारे क्रियाकलापों के प्रधान कर्ताधर्ता हैं उनके द्वारा संचालित राष्ट्रीय विद्यालयों तथा पर्वोंकाध्येय है- अंग्रेजों का भारत से निष्कासन तथा जनता को राष्ट्रवाद के उच्च स्तर पर लाना"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात निर्मित संविधान आधारित शैक्षिक प्रावधान तथा शैक्षिक नीतियां,अनेकों वर्ष पूर्वलोकमान्य तिलक की शैक्षिक अवधारणा में दृष्टिगोचर होती हैं।तिलक के शैक्षिक विचार स्वतंत्रता प्राप्ति के उद्देश्य से अत्यंत महत्वपूर्ण थे, उनकी विचारधारा ने स्वतंत्रता आंदोलन कोवह गति प्रदान की जो आगे चलकर स्वतंत्रता प्राप्ति में परिणत हुई ।

संदर्भ

- घोष, अरविंद,बाल गंगाधर तिलक हिज़राइटिंग्स एंड स्पीचेज़, गणेश एंड कंपनी मद्रास,1922
- जोग,एनजी.आधुनिक भारत के निर्माता, प्रकाशन विभाग भारत सरकार, 1969
- केलकर, न.चिं. लोकमान्य तिलक का चरित्र ,अरुणोदय प्रेस,ठाणे 1927
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक,लोकसभा सचिवालय, नई दिल्ली 2019
- नागरी प्रचारिणी सभा,तिलक का राजभाषा संबंधी प्रस्ताव,1905
- राधाकृष्ण न सर्वपल्ली एमिनेंटओरिएंटलिस्ट- इंडियन यूरोपियन अमेरिकन, जी ए नटेसन एन्ड कंपनी मद्रास 1922

*Corresponding Author: **डॉ.अपर्णा त्रिपाठी**